

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যরর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

শ্রী মেল্পপত্তূর্ নারায়ণভট্টতিরি ঝিরচিতম্
॥শ্রীমন্নারায়ণীয়ম্ ॥

দশক - ৬২

This document has been prepared by*
Sunder Kidambi
with the blessings of
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্
His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam

*This was typeset using Bengali for T_EX.

श्रीः
श्रीमते कृष्णाय परब्रह्मणे नमः
श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्रीमन्नारायणीयम् ॥

दशक - ७२

इन्द्रयागविघातरर्णम्

कदाचिदोपालान् रिहितमखसम्भारविभरान्
निरिक्त्य त्वं शौरे मघरमदमुधरं सितुमनाः ।
विजानन्नप्येतान् विनयमृदु नन्दादिपशुपा-
नपृच्छः को वायं जनक भवतामुद्यम इति ॥ १ ॥

वभाषे नन्दसुरां सुत ननु विधेयो मघरतो
मथो रर्षे रर्षे सुखयति स रर्षेण पृथिवीम् ।
नृणां रर्षायुतं निखिलमुपजीर्यां महितले
विशेषादस्माकं तृणसलिलजीर्या हि पशरः ॥ २ ॥

इति श्रुत्वा वाचं पितुरयि भवानाह सरसं
धिगेतन्नो सत्यं मघरजनिता वृष्टिरिति यत् ।
अदृष्टं जीरानां सृजति खलु वृष्टिं समुचितां
महारण्ये वृक्षाः किमिह बलिमिन्द्राय ददते ॥ ३ ॥

इदं तवत् सत्यं यदिह पशरो नः कुलधनं
तदाजीर्यायासौ बलिरचलभर्त्रे समुचितः ।
सुरेभ्योप्युतकृष्ठा ननु धरणिदेवाः क्षितितले
ततस्तेप्याराध्या इति जगदिथ त्वं निजजनान् ॥ ४ ॥

भरद्वाचं श्रुत्वा बह्मतिर्युतास्तेपि पशुपाः
द्विजेन्द्रानर्चन्तो बलिमददुरुच्छैः क्षितिभृते ।
व्याधुः प्रादक्षिण्यं सुभ्रमनमन्नादरयुता-
सुरमादशैलात्मा बलिमखिलमाभिरपुरतः ॥ ५ ॥

অরোচশৈবরং তান্ কিমিহ ঝিতথং মে নিগদিতং
 গিরীন্দ্রো নশ্বেষ স্ববলিমুপভুঙক্তে স্বরপুষা।
 অযং গোত্রো গোত্রদ্বিষি চ কুপিতে রক্ষিতুমলং
 সমস্তানিতুক্তা জহসুরখিলা গোকুলজুষঃ ॥ ৬ ॥

পরিপ্রীতাঃ যাতাঃ খলু ভরদুপেতা ব্রজজুষো
 ব্রজং যাবত্তারন্নিজমখরিভঙগং নিশময়ন্।
 ভরন্তং জানন্নপ্যাধিকরজসাক্রান্তহৃদযো
 ন সেহে দেবেন্দ্রস্তরদুপরিচিতাস্থোন্নতিরপি ॥ ৭ ॥

মনুষ্যস্বং যাতো মধুভিদপি দেবেষরবিনয়ং
 বিধত্তে চেন্ঠস্ত্রিদশসদসাং কোপি মহিমা।
 ততশ্চ ধরংসিস্যে পশুপহতকস্য শ্রিয়মিতি
 প্রবৃত্তস্তরাং জেতুং স কিল মঘরা দুর্মদনিধিঃ ॥ ৮ ॥

অদারাসং হন্তং প্রলযজলদানস্বরভুরি
 প্রহিণরন্ বিভ্রাণঃ কুলিশমযমভ্রেভগমনঃ।
 প্রতশ্চেন্যৈরন্তর্দহনমরুদাদৈর্বিহিসিতো
 ভরন্মায়া নৈব ত্রিভুরনপতে মোহযতি কন্ ॥ ৯ ॥

সুরেন্দ্রঃ ক্রুদ্ধশ্চেচ্ছ দ্বিজকরণয়া শৈলকৃপয়া-
 প্যনাতঙকোস্মাকং নিযত ইতি বিশ্বাস্য পশুপান্।
 অহো কিন্নাযাতো গিরিভিদিতি সখিঃন্ত্য নিরসন্
 মরুদগোহাধীশ প্রণুদ মুররৈরিন্ মম গদান্ ॥ ১০ ॥
